आज के जीवन में अपरिग्रह का महत्त्व

☐ डॉ० हुकुमचन्द जैन
एम. ए., पी-एच. डी., सहायक आचार्य

यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसको अपना जीवनयापन करने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता होती है। उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज में रहकर विभिन्न प्रकार के प्रयत्न करता है और आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करके अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाता है। किन्तु मनुष्य में बुराई वहाँ से प्रारम्भ होती है, जहाँ से वह अपनी इच्छाओं को संयमित करने के बजाय उनकी वृद्धि करता है और उनकी पूर्ति हेतु कुमार्ग पर चल पड़ता है। यही उसके जीवन का अन्धकारमय पक्ष है। इसी अन्धकारमय पक्ष के वशीभूत होकर वह वस्तुओं का अनावश्यक संग्रह प्रारम्भ कर देता है और इस तरह से उसमें परिग्रह-वृत्ति जन्म ले लेती है। इसी परिग्रह-वृत्ति से मानसिक विकारों की परम्परा प्रारम्भ हो जाती है। इन मानसिक विकारों की परम्परा के मूल में इच्छा-तृष्णा विद्यमान रहती है। उत्तराध्ययन सूत्र में ठीक ही कहा है, यदि कैलाश पर्वत के समान सोने चाँदी के असंख्य पर्वत हों फिर भी तृष्णावान् मनुष्य को उन पर्वतों से कुछ भी संतोष नहीं मिलता। निश्चय ही इच्छा आकाश के समान अनन्त है।[1] मनुष्य की कुछ प्रवृत्ति ऐसी होती है कि लाभ होने के साथ लोभ की वृत्ति बढ़ जाती है और लोभ-वृत्ति ही परिग्रह-वृत्ति को बढ़ाती है।[2] यह परिग्रह-वृत्ति जब सीमा को लाँघ जाती है तो व्यक्ति वस्तुओं की प्राप्ति के लिए हिंसा, चोरी, असत्य आदि का दास हो जाता है। जो व्यक्ति उसकी परिग्रह-वृत्ति के पोषण में सहायक होता है, उसको ही वह अपना समझता है और जो व्यक्ति उसकी परिग्रह-वृत्ति पर रोक लगाना चाहते हैं उनसे उनका वैर हो जाता है। इस कारण से उसके जीवन में क्रोध कषाय प्रबल हो जाता है। जैसे उसके लिए क्रोध प्रबल हो जाता है वैसे अत्याचार करने में उसको कोई हिचकिचाहट नहीं होती। इसी परिग्रह-वृत्ति के कारण वह अनेक प्रकार के दुःखों से ग्रस्त हो जाता है। सदैव एक मानसिक क्षोभ का अनुभव करता है। इसी मानसिक क्षोभ का उदाहरण नेमिचन्द्रसूरि कृत रयणचूडरायचरियं में देखा जा सकता है। हिण्डोला-क्रीड़ा के समय मानसिक काम-विकार की पूर्ति हेतु धन का अनावश्यक संचय करने के लिए सोमप्रभ ब्राह्मण जंगल-जंगल भटक कर मानसिक दुःखों से पीड़ित रहता है।

परिग्रह-वृत्ति का प्रबलतम कारण मनुष्य की आसक्तिमय मानसिक अवस्था है। इस आसक्ति के परिणामस्वरूप व्यक्ति जीवन में अनावश्यक संग्रह को महत्त्व देने लगता है। यह संग्रहवृत्ति एक ओर जहाँ व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है, वहाँ दूसरी ओर सामाजिक जीवन को भी गड़बड़ा देती है। संग्रहवृत्ति से बाजार में कृत्रिम अभाव पैदा हो जाता है, वस्तुओं के भावों में तेजी आने लगती है जिससे सामान्य जन कठिनाई का अनुभव करता है। इससे गरीब और अधिक गरीब हो जाता है। परिग्रह-वृत्ति वाले अमीर और अधिक अमीर हो जाते हैं। समाज में एक आर्थिक विषमता उत्पन्न हो जाती है। इससे शोषणवृत्ति फैलती है एवं भ्रष्टाचार को प्रश्रय मिलता है।

---

१. उत्तराध्ययनसूत्र, नमिपवज्जा अध्ययन, गा० नं० ४८
२. समणसुत्त, गा० नं० ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्य की सामान्य आवश्यकता है भोजन, वस्त्र और मकान। यदि ये वस्तुएँ सभी को सामान्य रूप से उपलब्ध हो जाएँ तो व्यक्ति का बहुत कुछ दुःख कम हो सकता है। किन्तु परिग्रह-वृत्ति वाले लोग समाज में कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर देते हैं और इन वस्तुओं के दाम आसमान छूने लग जाते हैं, जो सामान्य जन के दुःख का कारण होते हैं। इस तरह से समाज में कुछ ही परिग्रह-वृत्ति वाले लोग अधिकांश लोगों को दुःखी करने में सफल हो जाते हैं।

परिग्रह-वृत्ति का एक आयाम मुनाफाखोरी भी है। इसके वशीभूत होकर व्यक्ति अत्यधिक मुनाफा कमाने लग जाता है और उसे जनजीवन के सुख का कोई भान नहीं रहता है। इसका भी सबसे बड़ा कारण व्यक्ति की अपनी भोग-विलास की आकाँक्षा की पूर्ति है। अत्यधिक आसक्ति के कारण जीवन में भोग-विलास की प्रवृत्ति बढ़ती है और व्यक्ति इस कारण से अत्यधिक मुनाफा कमा करके धन-संचय की ओर अग्रसर हो जाता है।

परिग्रह-वृत्ति से मानसिक क्षमता एवं शांति नष्ट हो जाती है। व्यक्ति में राग-द्वेष की वृत्ति बढ़ने से इसका सामाजिक समायोजन विकृत हो जाता है और समता के अभाव में मनुष्य आत्महित की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। जीवन में अशांति होने से मनुष्य में उच्च विचारों का ग्रहण कठिन हो जाता है। व्यसनों के मूल में भी परिग्रहवृत्ति ही उपस्थित रहती है।

यदि हम विभिन्न राष्ट्रों के आपसी संबंधों की ओर ध्यान दें तो परिग्रह-वृत्ति के कारण शक्तिसंग्रह ही संघर्षों में तनाव उत्पन्न करता है। शक्तिसंग्रह भी परिग्रह-वृत्ति का एक रूप है। विभिन्न राष्ट्र अपनी सीमावृद्धि के लिए तथा वैचारिक मतभेद के कारण दूसरे राष्ट्रों को नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं और अपनी शक्ति-संवर्धन के लिए दूसरे राष्ट्रों के साथ युद्ध में उतर जाते हैं। परमाणु बम, सेना, हथियार आदि सभी का संग्रह मनुष्य की परिग्रह-वृत्ति से उत्पन्न कलुषित भावना के उदाहरण हैं। परिग्रह-वृत्ति के कारण राष्ट्र अपने विज्ञान एवं वैज्ञानिकों का भी दुरुपयोग करता है। मानव-कल्याण की भावना उनके लिए गौण होती है और अपने राष्ट्र को सर्वोपरि बनाना उनके लिए मुख्य होता है। जिस तरह से व्यक्ति का अहंकार उसको दूसरे व्यक्तियों का शोषण करने में लगाता है उसी प्रकार राष्ट्रों का अपना अहंकार भी दूसरे राष्ट्रों के शोषण में लग जाता है। यह शोषण राष्ट्रों के स्तर पर परिग्रहवृत्ति का ही परिणाम है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मनुष्य की अधिकांश बुराई के मूल में परिग्रहवृत्ति ही उपस्थित रहती है। मानवीय विकास के लिए इस वृत्ति को नष्ट करना व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित में है। जैन-दर्शन ने इस वृत्ति की भीषणता को समझा है और उसको समाप्त करने के लिए सम्यक्चारित्र का उपदेश दिया है। यह सम्यक्चारित्र सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान सहित होना चाहिए। गृहस्थ के लिए परिग्रह-परिमाणव्रत की व्याख्या की है, जिसका पालन करने से व्यक्तिगत शान्ति एवं सामाजिक विकास दोनों ही संभव हैं। इसलिए हमारे जीवन में अपरिग्रह का अत्यन्त महत्त्व है। □□

—जैनविद्या एवं प्राकृतविभाग,
सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org